अर्थ परिवर्तन की दिशाएं

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

भाषा में प्रयुक्त शब्दों और उनके अर्थों का विचार हमारे राष्ट्र में प्राचीन काल से ही होता चला आ रहा है। यास्क, पतञ्जलि, भर्तृहरि तथा संस्कृतकाव्यशास्त्रकारों ने इस विषय पर विस्तार से विचार किया है। अभिधा, लक्षणा तथा व्यञ्जना शब्दशक्तियों के द्वारा शब्दों के अर्थों का निश्चय और उनके परिवर्तन का पर्याप्त विवेचन प्राचीन आचार्यों ने किया है। आधुनिक काल में, नवीन रूप में भाषाविज्ञान का विकास होने पर ये पाया गया कि अर्थ परिवर्तन की छः दिशाएं हैं। इनका विस्तारपूर्वक उल्लेख आगे किया जा रहा है-

1. **अर्थविस्तार**- अर्थविस्तार में शब्दों का अर्थ अपने मौलिक अर्थ के रहते हुए, अपने सीमित क्षेत्र का अतिक्रमण कर व्यापक अर्थ को सूचित करने लगता है। अर्थविस्तार मुख्यतः इन कारणों से होता है-क) सादृश्य, ख) साहचर्य, ग) सामीप्य, घ) तात्कर्म्य, ङ) शब्दार्थ के एक अंश की अविवक्षा, च) मुख्यार्थ से सम्बद्ध अन्य अर्थ की प्रतीति। उदाहरण के लिए "तैल" शब्द पहले केवल 'तिल के तेल' के लिए प्रयुक्त होता था, किन्तु आज सभी प्रकार के तेलों के लिए। इसी प्रकार कुछ अन्य शब्दों को यहाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है-

शब्द	मौलिक अर्थ	विस्तृत अर्थ
गवेषणा	गाय ढूढने की इच्छा	अनुसन्धान, शोध
प्रवीण	वीणा बजाने में कुशल	निपुण, दक्ष
कुशल	कुशों को लाना	दक्ष, चतुरता
अभ्यास	बाण फेंकना	प्रयत्न
स्याही	काले रंग की स्याही	सभी रंग की स्याही
गोष्ठ	गाय के रहने का स्थान	सभी पशुओं के रहने का स्थान

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

अधर	नीचे का ओष्ठ	दोनों ओष्ठ
गधा	पशु विशेष	मूर्ख
हरिश्चन्द्र	सत्य बोलने वाला व्यक्ति विशेष	सत्य बोलने वाले सभी व्यक्ति
युधिष्ठिर	धर्माचरण करने वाला व्यक्ति विशेष	धर्माचरण करने वाले सभी व्यक्ति
जयचन्द	देश के साथ धोखा करने वाला व्यक्ति विशेष	देश के साथ द्रोह करने वाले सभी व्यक्ति
विभीषण	अपने घर से द्रोह करने वाला व्यक्ति विशेष	अपने घर के साथ द्रोह करने वाले सभी व्यक्ति
सब्जी	हरी सब्जी	सभी प्रकार की सब्जी

हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर, जयचन्द, विभीषण-इन शब्दों के अनुशीलन से परिलक्षित होता है कि व्यक्तिवाचक संज्ञाओं में भी अर्थविस्तार होता है।

2. **अर्थसंकोच**-अर्थविस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है। उनका विस्तृत अर्थ संकुचित या सीमित हो गया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अर्थसंकोच होने पर सामान्य या विशिष्ट अर्थ के द्योतक शब्द किसी संकुचित अर्थ में प्रयुक्त होने होने लगते हैं। प्रो० मिशेल ब्रेआल का यह अभिमत है कि राष्ट्र या जाति जितनी अधिक विकसित होगी, उसकी भाषा में अर्थसंकोच के उदाहरण उतने ही अधिक मिलेंगे। इसका अभिप्राय यह है कि संस्कृति और सभ्यता के विकास से सामान्य शब्द विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने लगते हैं। जैसे 'मृग' प्राचीन काल में सभी जानवरों के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द था, किन्तु आज मृग शब्द केवल हरिण के अर्थ का वाचक है। इसी प्रकार आगे दिए गए शब्द भी अर्थसंकोच को प्राप्त हो चुके हैं-

शब्द	मौलिक अर्थ	संकुचित अर्थ

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

वेद	विद्या	ऋग्वेद आदि
वृषभ	सृजन करने वाला	साँड
आदित्य	अदिति के सभी पुत्र	सूर्य
अम्बुज	जल से उत्पन्न होने वाला	कमल
जलद	जल देने वाला	बादल
तोयधि	जल धारण करने वाला	समुद्र
वर	जो माँगा जाए	दूल्हा
अछूत	अस्पृश्य	जाति विशेष
पय	पीने का पदार्थ	दूध
सर्प	रेंगने वाला	साँप
पर्वत	पर्व (गांठ वाला)	पहाड़
तटस्थ	किनारे पर खड़ा	निष्पक्ष
सभ्य	सभा में बैठने वाला	शिष्ट
श्राद्ध	श्रद्धायुक्त कर्म	मृतक श्राद्ध
दुहितृ	गाय आदि दूहने वाली	पुत्री
भार्या	जिसका भरण-पोषण किया जाए	पत्नी

अर्थसंकोच के कारण निम्नलिखित हैं-

क) समास-समास से अर्थ संकोच हो जाता है। उदाहरणार्थ- कृष्णसर्प- साँप की एक जाति, राजपुरुष- राजकीय कर्मचारी, मनसिज-कामदेव, चतुर्मुख- ब्रह्मा, दशानन- रावण, पीताम्बर-कृष्ण, नीलाम्बर-बलराम।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ख) उपसर्ग- उपसर्ग लगने से भी अर्थ संकुचित हो जाता है। जैसे-योग- संयोग, वियोग, उपयोग, आयोग, नियोग, प्रयोग। गम-आगम, निगम, सुगम, दुर्गम, संगम, उद्गम। कार-प्रकार, आकार, विकार, संस्कार, प्रतिकार। हार-आहार, विहार, प्रहार, संहार।

ग) प्रत्यय-प्रत्यय के योग से अर्थसंकोच के उदाहरण हैं। भक्ति, भाग, भजन-एक ही धातु से निष्पन्न होने पर भी विभिन्न प्रत्यय के कारण विभिन्न अर्थों के वाचक बन गए हैं। ऐसे ही 'मन्' धातु से मति, मत, मनन, मान आदि अनेक शब्द बने हैं किन्तु सबके विभिन्न अर्थ हैं।

घ) विशेषण- अर्थसंकोच का एक बहुत बड़ा साधन विशेषण है। गुलाब शब्द कहने से किसी भी रंग के गुलाब का बोध हो सकता है किन्तु लाल गुलाब कह देने पर उजले, पीले, नीले, हरे आदि रंग के गुलाब का व्यवच्छेद हो जाता है। यहाँ लाल विशेषण के कारण गुलाब का अर्थ संकुचित हो गया। इसी प्रकार-जन-दुर्जन, सज्जन। आचार-सदाचार, दुराचार, कदाचार, भ्रष्टाचार। कमल-नीलकमल, श्वेतकमल, रक्तकमल। पुरुष-भद्र पुरुष, दुष्ट पुरुष, नीच पुरुष।

3. **अर्थादेश**-अर्थादेश का अर्थ है, एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है-एक को हटाकर दूसरे का आना। अर्थादेश में शब्द का प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है।उदाहरणार्थ 'असुर' शब्द ऋग्वेद में देवतावाची है, परन्तु बाद में दैत्यवाची हो गया। अन्य उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं-

शब्द	मौलिक अर्थ	परिवर्तित अर्थ
सपत्न	एक ही स्त्री के लिए लड़ने वाला	शत्रु
पाषण्ड	साधुओं का एक सम्प्रदाय	भ्रष्टाचार
अनुग्रह	पीछे से हाथ लगाना	कृपा
मौन	मुनि सम्बन्धी आचरण	चुप रहने की दशा
आकाशवाणी	देवताओं की वाणी	All India Radio

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

देवानां प्रियः	अशोक की उपाधि	मूर्ख
सह्	जीतना	सहना
मुग्ध	मूर्ख	मोहित होना

4. **अर्थोत्कर्ष**- जब, पहले कोई शब्द किसी बुरे अर्थ (निकृष्ट अथवा अपकृष्ट) अर्थ में प्रयुक्त होता है किन्तु बाद में उत्कृष्ट अर्थ को कहने लगता है, तब अर्थ का विकास अर्थोत्कर्ष की दिशा में हुआ माना जाता है। उदाहरण के लिए पहले 'साहस' शब्द संस्कृत में व्यभिचार या हत्या के अर्थ में प्रयुक्त होता था, किन्तु अब वह हिन्दी में एक अच्छे कार्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अन्य उदाहरण हैं-

शब्द	मौलिक अर्थ	उत्कर्षपरक अर्थ
कर्पट	फटा-पुराना जीर्ण वस्त्र	सभी वस्त्र
फिरंगी	पुर्तगाली डाकू	यूरोपियन
गोष्ठ	गोशाला	सभ्य समाज की सभा
गवेषणा	गाय ढूढ़ना	अनुसन्धान
सभ्य	सभा में बैठने वाले	सुसंस्कृत

5. **अर्थापकर्ष**- जब पहले कोई शब्द अच्छे अर्थ में प्रयुक्त होता है, किन्तु बाद में, वह बुरे अर्थ को कहने लगता है, तब उसे अर्थ का अपकर्ष हो जाता है। इसे निम्नलिखित उदाहरणों से स्पष्ट किया जा सकता है-

शब्द	मौलिक अर्थ	अपकर्षक अर्थ
असुर	देववाचक	राक्षस
अभियुक्त	प्रामाणिक पुरुष	अपराधी
महाजन	श्रेष्ठ व्यक्ति	सूदखोर
जुगुप्सा	पालन करना	घृणा करना

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

घृणा	घृणा और दया	घृणा
लिङ्ग	चिह्न	इन्द्रिय
चतुर्वेदी	चार वेदों को जाननेवाला	अधिक खाने वाला

6. **अर्थापदेश**- अप्रिय, अशुभ, भयानक, अमंगलसूचक बातों को इसलिए सुन्दर शब्दों द्वारा व्यक्त किया जाता है कि इसका दोष कम कर दिया जाए। इस प्रकार सुन्दर शब्दों द्वारा अभिव्यक्त शब्द ही इसके अर्थ का द्योतक होता है। उदाहरणार्थ- मृत्यु=स्वर्गवास, लाश=मिट्टी, अन्धा=सूरदास, मलत्याग=शौच आदि।

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi